॥ श्री ॥

समयसार

SAMAYASAARA

आ. कुन्दकुन्द · २वीं शती · अभिलेख ३/९०

श्री जिनचन्द्राचार्य → **आ. कुन्दकुन्द** → श्री उमास्वामी (गृद्धपिच्छाचार्य)

संक्षिप्त परिचय

आचार्य कुन्दकुन्द की सर्वाधिक प्रसिद्ध कृति और दिगम्बर अध्यात्म का शिखर-ग्रन्थ। शौरसेनी प्राकृत गाथाओं में शुद्ध आत्मतत्त्व (समय) का निरूपण — जीव और कर्म-संयोग का भेदविज्ञान, निश्चय और व्यवहार नय की प्रसिद्ध पद्धति से।

इस पर आचार्य अमृतचन्द्र की आत्मख्याति टीका (जिसके अन्तर्गत समयसार कलश काव्य) और आचार्य जयसेन की तात्पर्यवृत्ति सुविख्यात हैं। पं. बनारसीदास का हिन्दी समयसार-नाटक और पं. जयचन्द छाबड़ा की वचनिका भी इसी की परम्परा में हैं।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

समयसार — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ३ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. कुन्दकुन्द; रचना-काल २वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक ६५) के अनुसार इनका समय १२७–१७९ है तथा गुरु श्री जिनचन्द्राचार्य। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "समयसारादि ८४ पाहुड" उल्लिखित है। इसी लेखनी से प्रवचनसार, पंचास्तिकाय, नियमसार, अष्टपाहुड, बारस अणुवेक्खा भी इस सूची में सम्मिलित हैं। समकालीन ग्रन्थों में षट्खण्डागम, कसायपाहुड, मूलाचार, तत्त्वार्थसूत्र परिगणित हैं।

इसी लेखनी से

प्रवचनसार · पंचास्तिकाय · नियमसार · अष्टपाहुड · बारस अणुवेक्खा

समकालीन ग्रन्थ

षट्खण्डागम · कसायपाहुड · मूलाचार · तत्त्वार्थसूत्र

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ३ — मूल छायाचित्र

← कसायपाहुड

प्रवचनसार →